रमेश पोखरियाल 'निशंक'
07/10/2019

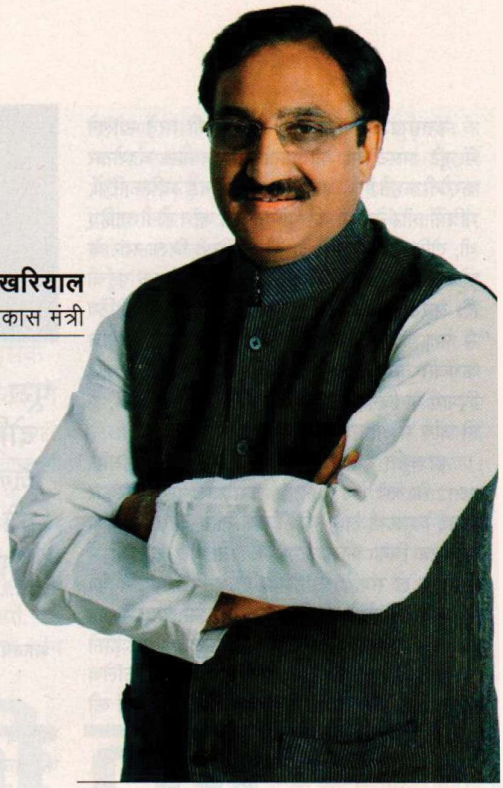

डॉ. रमेश पोखरियाल
मानव संसाधन विकास मंत्री

शिक्षा: सतत विकास के लिए संभावित उत्प्रेरक

अगले साल तक भारत दुनिया की सबसे युवा आबादी वाले देशों में से एक बन जाएगा जिसकी 64 प्रतिशत आबादी सक्रिय कामकाजी युवाओं की होगी। गिरते जन्मआ दर के बावजूद बढ़ती जीवन प्रत्याशा और प्रमुख जनसांख्यिकीय बदलाव के कारण, भारत की वर्तमान जनसंख्या जो अभी 1.3 अरब से अधिक है, 2030 तक 1.5 अरब और 2050 तक 1.6 अरब हो जाने का अनुमान है। ऐसा अनुमान है कि एक दशक से कम समय में भारत चीन को पीछे छोड़कर आबादी के मामले में दुनिया का सबसे बड़ी जनसंख्या वाला देश बन जाएगा, जहां 1.4 अरब लोग रह रहे होंगे। दुनिया के कुल क्षेत्रफल के महज 2.5 प्रतिशत भू-भाग पर दुनिया की 18 प्रतिशत आबादी के निवास को देखते हुए ये एक बड़ी चुनौती होगी।

वर्ष 2015 में गरीबी, लिंग भेद, अन्याय, कुपोषण और शोषण को समाप्त करने एवं हमारी प्रकृति की रक्षा के लिए, एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट 2030 को एक महत्वाकांक्षी मार्ग के रूप में स्वीकार किया गया था। स्थिरता केवल पर्यावरण के बारे में नहीं है। इसमें लोगों की वर्तमान जरूरतों को पूरा करने की क्षमता भी शामिल है और ये क्षमता अनिश्चितकाल तक बनी रहे, ये भी जरूरी है। यह जीवमंडल और मानव सभ्यता के सौहार्द से एक साथ रहने की क्षमता से भी जुड़ा है। भारत की जनसांख्यिकी और उच्च आर्थिक विकास दर को देखते हुए दुनिया के लिए यहां का सतत विकास बेहद महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान में रखते हुए भारत को एसडीजी के कार्यान्वयन में सफलता प्राप्त करने के रणनीतिक तरीकों पर विचार-विमर्श करने की आवश्यकता है। सवाल है - "सतत विकास लक्ष्यों को कैसे प्राप्त किया जाए?"

यह माना जाता है कि अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा स्थायी दुनिया के सपने को साकार करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है क्योंकि देश की शिक्षा प्रणाली प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से एक अरब से अधिक लोगों के जीवन को छूती है। भारत में हमारे पास दुनिया की सबसे बड़ी उच्च शिक्षा प्रणाली है, जिसमें देश भर में 50 हजार से अधिक उच्च शिक्षा संस्थानों और 900 से अधिक विश्वविद्यालयों में 3 करोड़ 30 लाख से अधिक छात्र नामांकित हैं। हमारे पास कामकाजी उम्र की (15 से 64 वर्ष की आयु के लोग) इतनी बड़ी आबादी है जो आश्रित आबादी (14 वर्ष या उससे कम उम्र के बच्चों और 65 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों) से कहीं अधिक है। सबसे अच्छी बात यह है कि हमारी यह बढ़त अगले तीन दशकों तक रहेगी। हम सामूहिक जवाबदेही और एक उज्ज्वल और बेहतर दुनिया बनाने के दृढ़ संकल्प द्वारा ग्लोबल वार्मिंग से उत्पन्न चुनौतियों को पार कर सकते हैं, जहां हम सभी प्रकृति के साथ मिलकर रह सकते हैं। दूसरे शब्दों में, हमें एक टिकाऊ जीवनशैली बनाने की आवश्यकता है।

इसके लिए हमें ये समझना होगा कि हमारी दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों का भविष्य में लोगों और हमारी पृथ्वी पर क्या असर होगा। शिक्षा टिकाऊ विकास के लिए एक संभावित उत्प्रेरक है। विकसित देशों में शिक्षा संस्थान स्थिरता के महत्व को पहचानते हैं, जबकि, भारत में हम इसकी अनदेखी कर रहे हैं। हमारे शिक्षा संस्थानों को स्थिरता के रणनीतिक महत्व से अवगत कराने के लिए बहुत प्रयास करने की आवश्यकता है। रणनीतिक योजना तैयार करने और उनके कार्यान्वयन की प्राथमिक जिम्मेदारी सरकार और नीति निर्माताओं के हाथ होती है। मगर इसके लिए शिक्षा संस्थानों

द्वारा जमीनी स्तर पर काम करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है, क्योंकि छात्रों को तेजी से बदलती दुनिया को समझने में सक्षम बनाने के लिए उनमें नए दृष्टिकोण विकसित करने की जरूरत होती है। उन्हें सभी गतिविधियों में भाग लेने की आवश्यकता है, फिर चाहे वो पर्यावरण सुरक्षा हो या एक समावेशी समाज निर्माण के लिए गरीबी मिटाना हो। कुल मिलाकर, शिक्षा में एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता है। हम नई शिक्षा नीति के साथ इन मुद्दों को हल करने की उम्मीद करते हैं। इसके पीछे एक अधिक सुरक्षित, समृद्ध और समान समाज बनाने का विचार है।

शिक्षा क्षेत्र में हितधारकों के रूप में, हमें अपने बच्चों को अपने तरीके से सतत विकास में योगदान करने के लिए सिखाना चाहिए। नीति निर्माताओं के रूप में हमें एक ऐसी रणनीति को तैयार करने और कार्यान्वित करने की आवश्यकता है जो हमारे बच्चों को एक स्थायी भविष्य की दिशा में सोचने और काम करने का मौका दे।

स्थायी विकास के बारे में छात्रों को शिक्षित करने का अर्थ है हर व्यक्ति को ऐसी सोच विकसित करने में सशक्त बनाना, जो उन्हें स्थायी भविष्य की दिशा में काम करने में मददगार हो सके। नई शिक्षा नीति (एनईपी) में हमारा उद्देश्य सभी स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच में सुधार करना है और छात्रों को स्थायी विकास के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल, मूल्यों और व्यवहार को विकसित करने में मदद करना है। हम अपने स्थानीय समुदायों को विभिन्न विकास परियोजनाओं के जरिये अपने शैक्षिक संस्थानों में शामिल करने के लिए समर्पित प्रयास कर रहे हैं। हमने IIT और IIM जैसे अपने शीर्ष शैक्षणिक संस्थानों को पांच समीपवर्ती गांवों से जोड़ने की पहल की है। 'वन बिलियन ट्रीज इनिशिएटिव' जैसे कार्यक्रमों, जिनमें स्थानीय समुदाय वृक्षारोपण अभियान में शामिल होते हैं, से प्रभावित होकर हमने पर्यावरण संरक्षण अभियान में अपने छात्र समुदाय को भी शामिल किया है। हाल ही में हमने एक देशव्यापी अभियान "वन स्टूडेंट वन ट्री" और समागम शिक्षा, जल सुरक्षा का शुभारंभ किया है। यह कार्यक्रम बहुत कम समय में बहुत लोकप्रिय हो गया है। भारत के बारे में अच्छी बात यह है कि यहां हम अपने समुदायों के माध्यम से बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। हमारे विशाल मानव संसाधन यदि सही तरीके से उपयोग किए जाएं तो बहुत बड़ा प्रभाव डाल सकते हैं। अच्छी बात यह है कि अगर हम अपने नागरिकों को सहायक भूमिका निभाने के लिए राजी कर पाते हैं तो हम वांछित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। सतत विकास नीति विकसित करने में भारत की चुनौतियां जलवायु परिवर्तन, लैंगिक असमानता, बेरोजगारी, पर्यावरण की स्थिति और बढ़ती सामाजिक असमानता से संबंधित हैं। एक राष्ट्र के रूप में हमें वैश्विक प्रभाव के साथ सतत विकास नीति से जुड़े इनपुट प्राप्त करने के लिए अपने उच्च शिक्षा संस्थानों का सहयोग हासिल करने की आवश्यकता है।

सात अरब से अधिक की विश्व जनसंख्या और घटते संसाधनों के साथ हमें जीवन जीने की कला में निपुण होने की आवश्यकता है। हमें स्पष्ट रूप से यह समझने की आवश्यकता है कि वर्तमान में हमारे कार्य हमारी आने वाली पीढ़ियों को प्रभावित करेंगे। हमें अपनी जीवनशैली को पूरी तरह से बदलने की जरूरत है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि स्थायित्व एक ऐसा अनुशासन है जो छात्रों को व्यवसाय, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, सामाजिक विज्ञान जैसी दुनियादारी के सभी पहलुओं में खास अंतर्दृष्टि प्रदान करके हासिल किया जा सकता है। आज की आधुनिक दुनिया में उद्योग कार्बन उत्सर्जन को कम करने, पर्यावरण अनुकूल उत्पादों का उत्पादन करने और भविष्य की हरित प्रौद्योगिकियों की खोज और विकास के लिए योग्य लोगों की तलाश कर रहे हैं। स्थिरता राजनीति, अर्थशास्त्र, दर्शन और अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ-साथ शुद्ध विज्ञान पर भी निर्भर करती है। इसलिए टिकाऊ कौशल और पर्यावरण जागरूकता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। विश्वविद्यालयों और अन्य उच्च शिक्षा संस्थानों को कार्बन उत्सर्जन में कमी और अन्य पर्यावरण-अनुकूल प्रौद्योगिकियों की खोज से संबंधित अध्ययनों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ विशेष पाठ्यक्रम डिजाइन करना चाहिए। स्थिरता किसी भी विज्ञान तक सीमित नहीं हो सकती, यह नीति, राजनीति, अर्थशास्त्र, इंजीनियरिंग और अन्य कठिन विज्ञान पर आधारित है। ऐसे पेशेवरों की मांग बढ़ रही है जो नागरिक नियोजन, पर्यावरण नियोजन, कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून और विभिन्न सरकारी एजेंसियों में स्थिरता ला सकते हैं। हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत ने सदियों पहले स्थिरता के सिद्धांत रखे। जब दुनिया अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रही थी, तब हम न केवल पर्यावरण के बारे में जागरूक थे, बल्कि एक टिकाऊ जीवन जी रहे थे। दुर्भाग्य से, हमारे प्राचीन विज्ञान की तरह, हम अपने पूर्वजों द्वारा निर्धारित पारिस्थितिक स्थिरता के सुनहरे सिद्धांतों को भूल गए हैं।

पिछले सात दशकों में हमने औद्योगिक क्षेत्र में भारी वृद्धि, कृषि में उल्लेखनीय विकास और हमारी ईंधन खपत में कई गुना वृद्धि देखी है जो धरती के दुर्लभ संसाधनों पर लगातार दबाव बना रहा है। सभी हितधारकों को एक साथ काम करके यह स्पष्ट करना चाहिए कि हमारा स्थायी भविष्य कैसा दिखेगा। सामूहिक रूप से, हमें स्वच्छ ईंधन स्रोतों पर जोर देने के साथ उभरती प्रौद्योगिकियों के लिए वैश्विक खोज को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, ताकि स्थिरता के आर्थिक और सामाजिक मूल में सकारात्मक योगदान दिया जा सके। इसके अलावा, हमें जन कल्याण को स्थायी बनाने के लिए अपनी क्षमता की जांच करने की आवश्यकता है। यह मूल्यांकन हमारे उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा सबसे अच्छी तरह किया जा सकता है।

गुणवत्ता और जीवन मूल्यों पर आधारित शिक्षा के साथ हमारे छात्रों को स्थायी विकास के लिए वैश्विक नागरिक के रूप में प्रशिक्षित किया जा सकता है। तेजी से बदलती दुनिया को समझने के लिए उन्हें नए दृष्टिकोणों से परिचित कराने की आवश्यकता है। उन्हें गरीबी को कम करने, पर्यावरण की रक्षा करने और समावेशी समाज बनाने में मदद करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। शिक्षा संस्थानों को अपने दृष्टिकोण में टिकाऊ होने के साथ-साथ विकासशील तकनीक के अपने उपयोग और बुद्धिमानी से हमारे देश की कला और विरासत को संरक्षित करने की दिशा में एक कदम उठाने की जरूरत है। हमें यह समझना चाहिए कि इक्कीसवीं सदी में टिकाऊ विकास सबसे बड़ी चुनौती है और शिक्षा क्षेत्र में सतत विकास के लिए उत्प्रेरक होने की क्षमता है।

सात अरब से अधिक की विश्व जनसंख्या और घटते संसाधनों के साथ हमें जीवन जीने की कला में निपुण होने की आवश्यकता है। हमें स्पष्ट रूप से यह समझने की आवश्यकता है कि वर्तमान में हमारे कार्य हमारी आने वाली पीढ़ियों को प्रभावित करेंगे।